DR.MALA KUMARI

ASSISTANT PROFESSOR (GUEST

TEACHER)

DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY

A.N.D COLLEGE SHAHPUR

PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)

PAPER-1 ,UNIT-10,

THINKING AND IMAGINATION

LECTURE-91

चिंतन में भाषा का महत्व

ROLE OF LANGUAGE IN THINKING

चिंतन में भाषा का क्या महत्व है ,यह मनोवैज्ञानिकों के बीच एक विवादास्पद विषय है |हार्टलैंड (1991)ने भाषा तथा चिंतन के संबंध की व्याख्या करने के लिए मनोवैज्ञानिकों के तीन अलग-अलग समूह की व्याख्या की है जो निम्नलिखित है –

(1) मनोवैज्ञानिकों के एक समूह जिसमे ओर्फ़ (1956)का नाम प्रमुख है ,का मत है की चिंतन भाषा पर आधारित होता है |
(2) मनोवैज्ञानिकों का दूसरा समूह जिसमे पियाजे (1968)का नाम प्रमुख है ,भाषा चिंतन पर आधारित होता है |

(3) मनोवैज्ञानिकों का तीसरा समूह जिसमे वाइगोटस्की(1962)का नाम प्रमुख है ,का मत है की दो साल के उम्र तक बच्चो में भाषा का विकास स्वतंत्र रूप से होता है परन्तु उसके बाद भाषा और चिंतन एक दुसरे पर अंत निर्भर हो जाते है और साथ-साथ विकसित होते है |

इन तीन विचार धाराओ का वर्णन निम्नांकित है –

(1) कुछ मनोवैज्ञानिकों का विचार है की चिंतन के लिए भाषा आवश्यक है |भाषा के अभाव में चिंतन की प्रक्रिया नहीं हो सकती है अतः चिंतन की प्रक्रिया से भाषा प्रभावित होती है तथा निर्धारित भी होता है |इस तरह के विचार व्यक्त करने वाले मनोवैज्ञानिकों में सापिर तथा उनके शिष्य ओल्फ (1956),ब्रूनर (1964),वर्नस्टीन (1958)आदि का नाम अधिक प्रसिद्ध है | सापिर की प्राक्कल्पना यह थी की भाषा द्वारा चिंतन की प्रक्रिया काफी हद तक प्रभावित होती है |इस प्राक्कल्पना का समर्थन ब्रूनर(1964) ने प्रयोगात्मक सबूतों द्वारा होता है |इन्होने ने शिशुओ तथा प्राक्-स्कूली छात्रो पर प्रयोग किया और पाया की इन बच्चो के चिंतन की प्रक्रिया तथा संज्ञानात्मक विकास अधिक सिमित इस लिए होता है क्योकि उनमे भाषा पूर्ण रूप से विकसित नहीं होती है |इनके अध्ययन के अनुसार 6 से 7 साल की उम्र में बच्चें सोचने के लिए अच्छी तरह से भाषा का उपयोग प्रारम्भ कर देती है |चूँकि प्राक्-स्कूली (PRIMARY SCHOOL) बच्चो की उम्र 6 साल से निचे होती है और उनमें भाषा का विकास पूर्ण नही रहता ,अतः उनका संज्ञानात्मक विकास विशेष कर चिंतन की प्रक्रिया ठीक ढंग से नहीं हो पाती है |इस प्रयोग से स्पष्ट

है की भाषा द्वारा चिंतन की प्रक्रिया प्रभावित होती है | ओर्फ़ (1956) ने अपने गुरु सापिर के इस कथन को, कि भाषा द्वारा चिंतन प्रभावित होती है और भी अधिक तीक्ष्ण करते हुए कहा की भाषा द्वारा चिंतन प्रभावित ही नहीं बल्कि निर्धारित भी होती है |सचमुच में ओर्फ़ के योगदान के मनोवैज्ञानिकों द्वारा अधिक मान्यता मिली है |ओर्फ़ की प्राक्कल्पना यह थी भाषा का विकास चिंतन की प्रक्रिया से पहले होता है तथा चिंतन की प्रक्रिया का निर्धारण पूर्ण रूपेण भाषा द्वारा ही होता है |इसे 'भाषाई नियति वाद कहा गया तथा साधारण रूप से 'ओर्फ़ प्राक्कल्पना के नाम से मशहूर हुआ | इस प्राक्कल्पना के अनुसार सभी उच्य स्तरीय चिंतन भाषा द्वारा ही निर्धारण होता है |

TO BE CONTINUED